डा० मिथिलेश कुमार
राजनीति शास्त्र विभाग

दिनांक - 18.4.20

दबाव समूह एवं औपचारिक व अनौपचारिक संस्था

शासन प्रणाली में दबाव समूह एवं औपचारिक/अनौपचारिक संस्था की भूमिका

दबाव समूह कोई नया विचार नहीं है। लगभग 80 वर्ष पूर्व आर्थर बेंटले की पुस्तक "दि प्रोसेस ऑफ गवर्नमेंट" प्रकाशित हुई थी, जिसमें उसने अनौपचारिक प्रक्रियाओं पर अधिक और औपचारिक संस्थाओं पर कम जोर दिया है।

दबाव समूह से अर्थ एक स्वैच्छिक संगठन से है जिसका उद्देश्य अपने विशिष्ट हितों की सुरक्षा तथा उन्हें विकसित करना या राजनीतिक व्यवस्था में अपनी स्थिति सुदृढ़ करना है। यह कुछ हद तक हित समूह तथा स्वैच्छिक संगठनों से मेल खाता है। दबाव समूह सामान्य तथा सर्वव्यापी हितों से सम्बन्धित होते हैं। लेकिन राजनीति में अगीदारी एवं भूमिका के रूप में दोनों को समान माना जाता है इन्हें दबाव समूह इसलिए कहते हैं कि क्योंकि ये दबाव डालकर राजनीतिक या नीतिगत परिवर्तन पाने का प्रयत्न करते हैं। इस अर्थ में वे राजनीतिक दलों से भिन्न होते हैं। क्योंकि ये नहीं

P.T.O.

राजनीतिक दलों से भिन्न होते हैं। ये भाँति प्रत्यक्ष चुनाव व कार्यालय में आते हैं और न ही इनका सरकार की गतिविधियों से सम्बन्ध होता है। प्रत्येक समूह अपने सदस्यों के हितों के अनुसार ही कार्य करता है। समूहों के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने की तीव्रता इनकी गतिविधियों की सामूहिक वैधता तथा राजनीतिक व्यवस्था में समूह की मांगों की वृद्धि की सम्भावना पर निर्भर करती है।

"माइनर वीनर" के अनुसार दबाव समूह से हमारा तात्पर्य शासकीय व्यवस्था के बाहर किसी भी ऐसे ऐच्छिक रूप संगठित समूह से है जो शासकीय अधिकारियों की नामजदगी अथवा नियुक्ति, सार्वजनिक नीति का निर्धारण, उसके प्रशासन और समझौता व्यवस्था को प्रभावित करने का प्रयास करता है।

भारत में बड़े स्तर पर सुसंगठित दबाव समूह आरम्भ से ही कार्य कर रहे हैं। इसके कारण 1947 से पूर्व उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष की प्रकृति एवं उसके बाद की दलीय व्यवस्था का विकास रहा है।

क्रमशः।